REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

# राष्ट्र के विकास को दिशा देती जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता

**Bhundiya Dipti Narendrabhai**
**M.A., M.A. in Education, B.Ed.**
**Primary Teacher , Degavada Primary School ,**
**Ta. Mahuva, Dist. Bhavnagar.**

## सारांश

यदि हम चाहते है मनुष्य का जीवन गुणवता पूर्ण हो, सबकी आवश्यकताएं सुविधानुसार पूरी होती रहें तो हमें अपने आर्थिक विकास तथा जनसंख्या वृद्धि के बीच एक सार्थक सन्तुलन स्थापित करना होगा। जनसंख्या को सीमित रखकर ही उपलब्ध साधनों के दायरे में आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है। स्वतंत्रता के पश्चात हमारे सकल राष्ट्रीय उत्पाद में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कृषि, उद्योग, तकनीकी, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं में विस्तार आदि की दिशा में राष्ट्र की उन्नति स्वतः स्पष्ट है। परन्तु जब हम अपनी इन उपलब्धियों को प्रति व्यक्ति उपलब्धता के मानक पर परखते है तो हमें निराशा ही हाथ लगती है। इस निराशा के मूल में हमारी अनियत्रित जनसंख्या वृद्धि है। निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव के कारण मांग और आपूर्ति के बीच सन्तुलन कठिन होता जा रहा है।

जनसंख्या नियंत्रण के इस दुर्गम लक्ष्य की प्राप्ति में जनसंख्या शिक्षा अभूतपूर्व सहयोग दे सकती है। जनसंख्या शिक्षा एक अभिनव शैक्षिक अवधारणा है। जिसका उद्देश्य लक्ष्यगत समुदायों में जनसंख्या तथा विकास के मध्य सम्बन्ध के प्रति चेतना विकसित करना। यह कार्यक्रम इस तथ्य की बोध पर भी बल देता है कि जनसंख्या के सम्बन्ध में व्यक्ति, समुदाय, समाज, तथा राष्ट्र के स्तर पर प्रत्येक नागरिक द्वारा लिया गया निर्णय विकास की गति एवं व्यक्ति तथा राष्ट्र के जीवन की गुणवता को प्रभावित करता है। यह मूलतः मानव संसाधन के विकास की शिक्षा है।

शिक्षा व्यक्ति का बहुमुखी विकास करती है और उसे चिंतन की नई विचारधारओं से जोड़ती है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण, उसकी प्रगति, सामाजिक परिवर्तन और मानव संसाधन के विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार किसी भी समाज या राष्ट्र के उत्थान में शिक्षा के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा का स्वरूप पूर्णतः व्यवस्थित व व्यवहारिक हो। अतः आज की समस्याओं और परिस्थितियों को देखते हुए जनसंख्या शिक्षा को व्यवहारिक शिक्षा के पाठ्यक्रम का आवश्यक अंग बनाना अनिवार्य हो गया है। क्योंकि आज जनसंख्या वृद्धि की समस्या न केवल हमारे देश की बल्कि पूरे विश्व की सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या हो गई है।

**मुख्य शब्द :** जनसंख्या, जनांकिकीय, शिक्षा।

## प्रस्तावना

हमारे देश की विशाल जनसंख्या तथा इसमें हो रही उत्तरोत्तर वृद्धि से उत्पन्न भीषण समस्याओं पर अंकुश लगाने हेतु प्रारम्भ में सरकार ने परिवार नियोजन से सम्बन्धित अनेक कार्यक्रम प्रारम्भ किये परन्तु इनके प्रति जनमानस में अनुकूल मनोवृत्ति न होने के कारण इन उद्देश्यों में अपेक्षित सफलता प्राप्त नही हो सकी। ऐसी स्थिति में इस बात की आवश्यकता महसूस की गई कि जनसंख्या वृद्धि को रोकने का वातावरण तैयार करने तथा इसके दुष्परिणामों से अवगत कराने के लिए जनसंख्या शिक्षा एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम है जो छात्रों में परिवार समाज, तथा देश के सन्दर्भ में एवं व्यवहार विकसित करने का प्रयास करता है। जनसंख्या शिक्षा के

प्रमुख उद्देश्य छात्र–छात्राओं का विश्व के परिप्रेक्ष्य में प्रदेश व देश की जनसंख्या स्थिति का बोध करना, जनांकिकीय के प्रमुख तत्वों जनसंख्या वृद्धि के कारणों तथा प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान, व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व के आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक जीवन पर जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप पड़ने वाले कुप्रभावों से परिचित कराना परिवार के आकार तथा जीवन स्तर के सम्बन्ध को समझने की क्षमता विकसित करना तथा छोटे परिवार की वांछनीयता के प्रभाव को सुदृढ़ करना आदि है। इसके अतिरिक्त जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से छात्र–छात्राओं को देश की जनसंख्या नीति तथा जनसंख्या सम्बन्धी विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी जाती है। इस प्रकार जनसंख्या स्थिति के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने की दिशा में जनसंख्या शिक्षा का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

ब्रिटिश इंडिया में प्रथम जनगणना 1872 में कि गई थी। 1947 में स्वतंत्रता के बाद 1951 से जनगणना प्रति दस वर्ष के अन्तराल पर की जाती है। गृह मंत्रालय के अधीन रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त द्वारा जनगणना की जाती है।

भारत की 15वीं राष्ट्रीय जनगणना का कार्य 1 मई 2010 को प्रारम्भ हुआ जो 31 मार्च 2011 को सम्पन्न हुआ, जिसके पश्चात जनगणना के अंतिम आकड़ो को जारी किया गया। यह जनगणना दो चरणों में सम्पन्न हुआ। तकनिकी संसाधनों को बढ़ावा देते हुए पहली बार जनगणना में बायोमैट्रिक जानकारी एकत्रित की गई जिसके आधार पर 2001–2011 के दशक में 18,14,55,986 से बढ़कर 1,21,08,54,977 हो गई है। इसमें प्रत्येक 1000 पुरूषों के लिए महिलाओं की संख्या 943 तथा ट्रासजेंडर (तीसरे लिंग) की आधिकारिक संख्या 4.9 लाख है। भारत की कुल साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है जिसमें 82.14 प्रतिशत पुरूष तथा 65.46 प्रतिशत महिलायें है।

भारत का क्षेत्रफल पूरी दुनियॉ के क्षेत्रफल का 2.4 फीसदी है लेकिन विश्व की कुल आबादी की तुलना में 17.5 फीसदी लोग भारत में रहते है। पिछली जनगणना में ये आंकड़ा 16.8 प्रतिशत था। भारत की मौजूदा आबादी 1 अरब 21 करोड़ है 2001 से 2011 में भारत की जनसंख्या 17.6 प्रतिशत की दर से 18 करोड़ बढ़ी है जो वर्ष 1991–2001 की वृद्धि दर 21.5 प्रतिशत से करीब 4 प्रतिशत कम है।

बींसवी शताब्दी के छठे दशक से इस बात की आवश्यकता का अनुभव किया गया कि बच्चों को प्रारम्भ से ही जनसंख्या वृद्धि के कारणों और उसके दुष्परिणाम से परिचित कराया जाए तथा उनमें जनसंख्या नियंत्रण की प्रवृत्ति विकसित की जाए। जनसंख्या शिक्षा का मूल उद्देश्य संसार की तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियंत्रण करना है। इस आधार पर जनसंख्या पर शोधकार्य करना नितांत आवश्यक है इसी परिप्रेक्ष्य में शोधकत्री ने इण्टरमीडिएट एवं स्नातक स्तर पर बालिकाओं के जनसंख्या वृद्धि ज्ञान, जनसंख्या वृद्धि के संभावित परिणाम तथा जनसंख्या शिक्षा के महत्व विषय पर अध्ययन करने का प्रयास किया।

व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उसके व्यक्तित्व को प्रत्येक स्तर पर प्रभावित करती है। आज के भौतिकवाद युग में अर्थ की प्रधानता प्रायः सर्वाधिक है। पुरूषार्थ के रूप में भी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, की प्रधानता दी गयी है। प्रायः आज के युग में धनवान व्यक्ति आदर का पात्र होता है तथा गरीब व्यक्ति निरादर की दृष्टि से देखा जाता है। स्पष्ट है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव जीवन के समस्त पहलुओं पर पड़ता है। प्रायः अच्छी सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित छात्राओं में जागरूकता अधिक पायी जाती है तथा वे जनसंख्या वृद्धि सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के प्रति प्रयासरत रहती है।

भारतवर्ष की जनसंख्या वृद्धि में क्षेत्रीय विषमता दिखाई पड़ रही है। केरल में जन्मदर सबसे कम है जबकि उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश और इनसे नवसृजित राज्यों जैसे झारखण्ड, छत्तीसगढ़ आदि में जन्मदर अधिक है। केन्द्र एवं राज्य सरकार की नीति है कि जनसंख्या वृद्धि 1.6 अथवा इससे कम हो परन्तु इस समय वृद्धि दर 2.1 से अधिक है। जिन प्रान्तों में प्रतिव्यक्ति आय एंव शिक्षा अधिक है वहाँ जनसंख्या वृद्धि का दर कम है उनकी तुलना में वे प्रान्त जहाँ व्यक्तियों की आय एवं शिक्षा कम है वहाँ जनसंख्या वृद्धि अधिक है। शिक्षा एवं आय दोनों जनसंख्या वृद्धि दर को कम करतें है। जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव, बच्चों की शिक्षा, सेवा के लिए उपलब्ध सुविधाओं, भोजन की गुणवत्ता आदि पर पड़ता है। जो परिवार आर्थिक रूप से सम्पन्न हैं और वहाँ दो–तीन बच्चें ही हैं वे अपने बच्चों की शिक्षा की अच्छी व्यवस्था कर सकतें हैं। उन्हें आवश्यकतानुसार पौष्टिक भोजन प्रदान कर सकतें हैं और यदि उन्हें आगे चलकर सेवाकार्य नहीं मिलता है तो स्व नियोजन के लिए पूँजी तथा अन्य साधन उपलब्ध करा सकते हैं। जो परिवार आर्थिक रूप से विपन्न हैं और उनमें अधिक बच्चें हैं वे उनको न अच्छी शिक्षा दे पातें है ना ही समुचित विकास के लिए पौष्टिक भोजन उपलब्ध करा पाते हैं। जिसका

परिणाम यह होता है कि ऐसे परिवार के बच्चों का शारीरिक विकास प्रभावित होता है और अल्प शिक्षा प्राप्त करने के कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

आज के बच्चे देश के भावी नागरिक हैं। जो बालक–बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण कर रहीं हैं वे आगे चलकर समाज में अपनी योग्यता के अनुसार सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करेगें और राष्ट्र के विकास में सहायक होंगे। परिवार के देखभाल एवं विकास में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं का अधिक योगदान माना जाता है। शिक्षित बालिकाएँ भविष्य में परिवार के साथ–साथ सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगीं।

जनसंख्या वृद्धि के नियत्रण के लिए सरकार ने कई योजनाएं विगत चार दशकों में आरम्भ की हैं। परिवार नियोजन की विभिन्न सुविधाओं, परिवार नियोजन के प्रचार प्रसार, दो–तीन बच्चों वाले परिवारों को कुछ अतिरिक्त सुविधाएं आदि का प्राविधान किया है। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के अन्तर्गत 14 सूत्रों का उल्लेख किया गया है जिनके माध्यम से जन्मदर को कम किया जा सकता है, और बच्चों एवं महिलाओं के स्वास्थ्य को अच्छा बनाया जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि के दुखद परिणामों को देखते हुए विगत दो–तीन दशकों से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नयी दिल्ली नें विश्वविद्यालयों से अपनें यहाँ जनसंख्या शिक्षा को पृथक विषय के रूप में अथवा प्रश्नपत्र के रूप में पढ़ाने का अनुरोध किया है।

आज के परिप्रेक्ष्य में जनसंख्या शिक्षा ही सीमित परिवार के मानक को स्वीकार करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। परन्तु विद्यालयी पाठ्यक्रम में इसे लागू करनें से छात्र छात्राओं तक पहुँचाया जाए और उन्हे तथा साथ–साथ समाज व देश को भी लाभन्वित किया जाए।

## अध्ययन की आवश्यकता

प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था से ही माता पिता को अपनी सन्तानों के उचित भरण पोषण तथा समूचित शिक्षा–दीक्षा की व्यवस्था के लिए उत्तरदायी माना गया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक माता–पिता की स्वयं भी यही आकांक्षा रहती है कि वे अपनी संतान का सर्वागीण विकास करें व उसके जीवन स्तर को उन्नत करें किन्तु यदि परिवार का आकार बड़ा है तो चाहते हुए भी बच्चों को आवश्यक सुविधाएं शिक्षा–दीक्षा आदि उपलब्ध नही करा पाते है।

बढ़ती हुई जनसंख्या का बोझ न केवल किसी परिवार के सीमित संसाधनों पर पड़ता है, बल्कि हमारे समाज व देश को भी इसका बोझ उठाना पड़ता है वर्तमान समय की अधिकांश जनसंख्या वृद्धि ही है बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पर्यावरण–प्रदूषण, निर्धनता, अशिक्षा आदि ऐसी मूलभूत समस्याएँ है जो आगे चलकर अनेक विसंगतियों को जन्म दे सकती है।

अतः आज यह आवश्यक हो गया है कि सीमित परिवार की अवधारणा को और अधिक सुस्पष्ट बनाया जाए क्योंकि यही एक मात्र साधन है जिसके द्वारा हम अपने देश के सीमित संसाधनो के अन्तर्गत बहुमुखी विकास कर सकते है। इस स्थिति में जनसंख्या शिक्षा राष्ट्र के विकास का एक महत्वपूर्ण सशक्त साधन बन सकती है। यदि जनसंख्या शिक्षा को राष्ट्र के जीवन और आकांक्षाओं से सम्बन्धित कर दिया जाए तो यह राष्ट्र के लोगों में उचित मूल्यों और प्रवृत्तियों का विकास कर राष्ट्र की समस्याओं को हल करने तथा चुनौतियों का प्रभावी ढ़ग से सामना करने हेतु बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। कुशल और अकुशल मानव शक्ति आवश्यकताओं, राष्ट्र की साधन क्षमता और जनसंख्या विकास में तालमेल विठाना किसी भी राष्ट्र के उचित नियोजित विकास में तालमेल बिठाना किसी भी राष्ट्र के उचित नियोजित विकास हेतु आवश्यक है। अतः यह आवश्यक और उचित होगा कि देश की शिक्षा व्यवस्था में जनसंख्या शिक्षा को समुचित महत्व दिया जाए।

## जनसंख्या शिक्षा को पाठ्यक्रम में रखने के विभिन्न प्रयास

वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य है 'बालक का सर्वागींण विकास करना' अतः यह निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि बालक को विषयवार किन विषयों, क्रियाओं आदि की शिक्षा दी जाये जिससे उसमें वाँछित प्रतिभाओं का विकास किया जा सके इन उद्देश्यों कि पूर्ति पाठ्यक्रम निर्धारण के द्वारा ही संभव है। यह वह प्रयास है जो सामाजिक समस्याओं के सूचनाओं व वाँछित उद्देश्यों को विद्यालय में पाठ्यक्रमों द्वारा प्राप्त करता है। पाठ्यक्रम सम्पूर्ण विद्यालयी जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। यह विशिष्ट पाठ्यक्रम पाठ्य सामग्री के

अध्ययन–अध्यापन से जुड़ा होता है। जो विद्यार्थियों को किसी एक विषय या अध्ययन के क्षेत्र में किसी एक विशिष्ट स्तर पर शिक्षा देने में सहायता प्रदान करता है।

भारत में व्याप्त जनसंख्या विस्फोट की स्थिति के परिणाम स्वरूप यह और भी आवश्यक हो जाता है कि देश की युवापीढ़ी को इस भयावह स्थिति के प्रति जागरूक बनाया जाए। सार्थक जनसंख्या शिक्षा के पाठ्यक्रम के माध्यम से जन जागरूकता फैलती है। यह पाठ्यक्रम जनसंख्या सम्बन्धी तथ्यों से सम्बन्धित होता है, इसे जीवन जीने की एक विधि के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह ज्ञान बच्चों को प्रौढ़ जीवन प्रभावी ढंग से जीने में सहायता प्रदान करेगी। जनसंख्या शिक्षा का ज्ञान सीखने वालों में, बढ़ती जनसंख्या के जीवन पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों के प्रति जागरूक करने के साथ ही परिवार नियोजन की प्रेरणा भी देती है। परिवार सीमित करने की उचित और प्रभावी प्रवृत्तियों का विकास करना भी जनसंख्या पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण भाग होता है। जनसंख्या शिक्षा राष्ट्र के विकास का एक महत्वपूर्ण सशक्त साधन है। जनसंख्या शिक्षा को राष्ट्र के जीवन और आकांक्षाओं से सम्बन्धित कर राष्ट्र के लोगों में उचित मूल्य और प्रवृत्तियों का विकास करके राष्ट्र के समस्याओं को हल करने तथा चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने हेतु प्रभावी भूमिका अदा करती है। अतः यह आवश्यक है कि देश की शिक्षा व्यवस्था में जनसंख्या शिक्षा को समुचित महत्व दिया जाता है। जिसके द्वारा भावी नागरिकों को जनसंख्या की वृद्धि से होने वाले हानियों का ज्ञान कराया जाता है, तथा उत्तम जीवन स्तर के लिए छोटा परिवार तथा कम जनसंख्या अधिक प्रभावी इत्यादि के महत्व को सामूहिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

## विद्यालय शिक्षा के विभिन्न विषयों में जनसंख्या शिक्षा का स्थान

शिक्षा का उद्देश्य बालक में ऐसी निपुणता, सामर्थ्य तथा दृष्टिकोण विकसित करना जो समाज में प्रभावी जीवन जीने के लिए आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा बच्चों को भावी पारिवारिक दायित्व निर्वहन के योग्य बनाने का कार्य विद्यालय करता है। जनसंख्या वृद्धि बालक के व्यक्तिगत, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा सम्पूर्ण संसार के मानवीय जीवन को प्रभावित करता है। अतः जनसंख्या शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाकर इसे भी अन्य विषय जैसे भाषा, गणित, भूगोल, विज्ञान, आदि के समान महत्व देकर उचित अर्थों में पढ़ाया जाता है। साथ ही इसे प्राथमिक शिक्षा से ही प्रारम्भ करने की योजना बनाई गयी है। जनसंख्या शिक्षा को बालक की सामान्य शिक्षा के महत्वपूर्ण भाग के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सन् 1970 के बाद से ही जनसंख्या शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मलित करने का प्रयास किया गया किन्तु यह अमेरिका, भारत, इंग्लैण्ड, आदि देशों की कुछ विद्यालयों में ही संभव हो पाया।

जनसंख्या शिक्षा विषय के शिक्षा का तात्पर्य ऐसी बातों की शिक्षा से है जो बालक को यह बतायें कि परिवार सीमित रखनें से उसे, उसके परिवार, समाज व राष्ट्र को क्या लाभ है। परिवार नियोजन संभव तथा आवश्यक भी है। परिवार की संख्या का उसके तथा राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य विकास कार्यों से क्या सम्बन्ध है तथा जनसंख्या इन्हे किस प्रकार प्रभावित करती है आदि का अध्ययन कर भावी जीवन के लिए ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

जनसंख्या शिक्षा विषय को विद्यालय पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना आवश्यक है जिससे बालक जनसंख्या सम्बन्धी महत्वपूर्ण तथ्यों से परिचित होता है। आज का बालक भावी जीवन में समाज के सदस्यों के रूप में तथा व्यक्तिगत रूप में भी जनसंख्या के सम्बन्ध में निर्णय लेने योग्य हो जाए। अतः अपने जीवन तथा पर्यावरण को प्रभावित करने बाले महत्वपूर्ण तत्व जनसंख्या के सम्बन्ध में उसे महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जा रही है।

जनसंख्या शिक्षा पाठ्यक्रम को एक स्वतंत्र विषय मानकर पाठ्यक्रम विकसित किया जाता है। विभिन्न कक्षाओं के स्तर के अनुसार जनसंख्या सम्बन्धी तथ्य निश्चित करके सुविधानुसार पाठ्यक्रम में रखा जाता है। जिसके द्वारा जनसंख्या सम्बन्धी बातों का विधवत् गहन ज्ञान दिया जाता है। इस प्रकार का पाठ्यक्रम माध्यमिक कक्षाओं तथा महाविद्यालयों एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अधिक उपयोगी है। स्वतंत्र विषय के रूप में जनसंख्या शिक्षा को पाठ्क्रम से सबसें बड़ा लाभ यह है कि सीखने वालों में जनसंख्या सम्बन्धी विभिन्न पहलुओं के प्रति ज्ञान बढ़ता है जिससे उनमें जागरूकता आती है।

जनसंख्या शिक्षा को संक्षिप्त पाठ्यक्रम के रूप में सामान्य विज्ञान तथा पर्यावरण पाठ्यक्रम के साथ जोड़ दिया जाए। इस प्रकार की व्यवस्था में इन विषयों की शिक्षा के साथ ही जनसंख्या सम्बन्धी महत्वपूर्ण बातें बतायी जाती है। इसके अन्तर्गत मूल विषय की अपेक्षा जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम बहुत कम तथा महत्वहीन होता है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों आदि में जनसंख्या शिक्षा एक स्वतंत्र अनिवार्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में समाहित की जाती है।

औपचारिक शिक्षा स्कूलों या विश्वविद्यालयी शिक्षा में जनसंख्या शिक्षा को अन्य विषयों के साथ छोटी इकाई के रूप में समन्वित करके शिक्षण किया जाता है। यह विशेष रूप से समाजशास्त्र, भूगोल, नागरिकशास्त्र, भाषा, स्वास्थ शिक्षा, गणित, गृह विज्ञान, आदि विषयों में अधिक संभव है। इस प्रकार की व्यवस्था से स्कूलों तथा अन्य शिक्षा में भार बढ़ता नही है अन्य विषयों की शिक्षा के साथ–साथ जनसंख्या सम्बन्धित बातों का ज्ञान भी सीखने वाले को हो जाता है।

## प्राथमिक स्तर पर जनसंख्या शिक्षा पाठ्यक्रम

इस स्तर पर छात्रों की संख्या सर्वाधिक होती है। अतः समाज के भावी नागरिकों को इस स्तर पर जनसंख्या सम्बन्धित सामान्य साधारण बातों का ज्ञान कराया जाता है। इस आयु में यौन सम्बन्धी ग्रन्थियाँ बच्चों में विकसित नहीं हो पाती अतः इस स्तर पर परिवार, उसके आधार, सुखी परिवार, आदि बातों को सरलता से बताया जाता है तथा बच्चों को यह भी बताया जाता है कि सीमित परिवार में कपड़ा, मकान, सुरक्षा, आदि की व्यवस्था करना सरल होता है तथा सीमित परिवार ही सुखी परिवार होता है। यदि परिवार में सदस्य अधिक हों तो इन सुविधाओं को जुटाने के लिए बहुत धन आवश्यक होगा।

प्राथमिक स्तर पर एक ही शिक्षक दो या तीन कक्षाओं को पढ़ाता है इसलिए जनसंख्या की संकल्पनाओं को पाठ्यक्रम में समन्वित ढ़ंग से जोड़कर सरलतापूर्वक शिक्षा दिया जाता है।

वर्तमान विषयों के पाठ्यक्रम को पूर्णतः संशोधित करके जनसंख्या सम्बन्धी तथ्यों को ऐसा जोड़ा जाता है, कि जनसंख्या सम्बन्धी तथ्य समन्वित पाठों से पूर्णतः सम्बन्धित लगें। इस प्रकार पाठ्य विषय और जनसंख्या शिक्षा के तथ्यों में कोई भिन्नता दिखायी नही देती। इस विधि के द्वारा पाठ्यक्रम में जनसंख्या सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित करके उन्हें पाठ्य विषयों में उपयुक्त स्थलों का चुनाव करके समन्वित किया जाता है। जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धित बातें ऐसी है कि विभिन्न विषयों के साथ सरलता से सम्बन्धित की जा सकती है।

## पूर्व माध्यमिक स्तर पर जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम

मनोवैज्ञानिकों ने बाल्यावस्था को जीवन का अनोखा काल कहा है। इसी उम्र में बालक में सामाजीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है सामाजिक गुणों का विकास होने के कारण बालक में नेतृत्व क्षमता का विकास भी होने लगता है अर्थात उनका जनसम्पर्क और अधिक बढ़ जाता है। अतः जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित और अधिक बातें उन्हे बतायी जाती है।

विषय के अनुसार अध्ययन में नागरिकशास्त्र, इतिहास, समाजशास्त्र, जीवशास्त्र, भाषा, गणित आदि विषयों से सम्बन्धित एक जनसंख्या शिक्षा की पुस्तक तैयार की योजना बन रही है अथवा इन्ही विषयों में एक छोटी ईकाई के रूप में समन्वित करने का प्रयास किया जा रहा है। यूनिट या इकाईयों के आधार पर माध्यमिक स्तर पर शिक्षण करना अधिक प्रभावी व उपयोगी होता है इस आधार पर एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा विकसित जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम अधिक व्यवहारिक है।

## उच्चस्तर पर जनसंख्या शिक्षा

उच्च स्तर पर छात्र–छात्राएँ आयु के आधार पर इतने परिपक्व हो जाते हैं कि वो अपने भावी जीवन के बारे में जागरूक हों, इस स्तर के छात्र–छात्राऐं जनसंख्या वृद्धि के परिणामों से परिचित होने लगते हैं तथा अपने परिवार के सदस्यों और साधनों के सम्बन्धों की समझ भी उनमें विकसित हो जाती है। अतः इस अवधि में उन्हें जनांकिकी सम्बन्धी समस्याओं तथा साधन और जनसंख्या का सम्बन्ध, सुखी पारिवारिक जीवन स्तर आदि कठिन संकल्पनाओं का ज्ञान कराया जाता है। सीमित परिवार करने सम्बन्धी उचित प्रवृत्तियों का विकास उनमें

शिक्षा के माध्यम से दिया जाता है। इन स्तरों पर जनसंख्या शिक्षा अलग पाठ्य विषय के रूप में तथा विभिन्न विषयों के साथ समन्वय करके अथवा छोटी ईकाई के रूप में संगठित करके पढ़ाया जाता है।

अतः प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर प्रचलित पाठ्यक्रम में जनसंख्या नियंत्रण सम्बन्धी जानकारी विभिन्न विषयों के साथ दिया जा रहा है। उच्च शिक्षा में इसे स्वतंत्र विषय के रूप में अनिवार्य विषय बनाना पाठ्यक्रम में लागू किया गया है।

## निष्कर्ष

जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जनसंख्या का आकार संरचना, लैगिक अनुपात विवाह की आयु आदि विषय आते है। इसके अतिरिक्त जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़े, प्रजनन एवं परिवारिक जीवन, खाद्य एवं पौष्टिक आहार, परिवार परिसीमन, मातृ एवं शिशु कल्याण, स्वास्थ्य एवं जनसंख्या नीति आदि जनसंख्या शिक्षा के महत्वपूर्ण अंग है।

विद्यार्थी के बौद्धिक एवं शैक्षिक स्तर के अनुसार जनसंख्या शिक्षा को प्राथमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। इस विकराल समस्या का चुनौतिपूर्ण ढ़ंग से सामना करने के लिए यह आवश्यक है कि जनसंख्या शिक्षा का प्रयोग सामाजिक क्रान्ति के एक महत्वपूर्ण अस्त्र के रूप में किया जाए।

## सन्दर्भ सूची


1 https://hi.m.wikipedia.org
2 https://www.bbc.com>2011
3 साहनी निर्मल (1967): 'जनसंख्या शिक्षा सिद्धन्त एवं तत्व जनसंख्या केन्द्र, उत्तर प्रदेश लखनऊ
4 दूबे एस0पी0 एंव डॉ0: जननांकिकी एंव जनसंख्या अध्ययन, साहित्य राम मिश्रा, बाबू, (1978) भवन, आगरा, कलात्मक मुद्रक, आगरा।
5 श्रीवास्तव, ओ0एस0 एंवः 'जनसंख्या का अर्थ व समाजशास्त्र, सरस्वती श्रीमती श्रीवास्तव कला (1970): सदन, 7 यू0ए0 जवाहर नगर, दिल्ली 7, प्रभात प्रेस– 175, नौचन्दी, मेरठ।
6 सिंह, दुर्गावती (1969) : 'छोटा परिवार सुखी परिवार' अरविन्द कुमार व राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, रूपक प्रिंटर्स, दिल्ली।
7 सिंह सुरेन्द्र नाथ (1975): 'मानव भूगोल का विवेचनात्मक अध्ययन'रामापति प्रेस, वाराणसी, प्रथम संस्कारण।

**Bhundiya Dipti Narendrabhai**
**M.A., M.A. in Education, B.Ed.**
**Primary Teacher , Degavada Primary School , Ta. Mahuva, Dist. Bhavnagar.**